एलिजाबेथ कैडी स्टैंटन

और महिलाओं का वोट

तान्या ली स्टोन

एलिजाबेथ कैडी स्टैंटन एक ऐसी महिला थीं जो अपने उसूलों और सिद्धांतों के लिए हमेशा खड़ी हुईं और लड़ीं. कम उम्र से ही एलिजाबेथ को पता था कि महिलाओं के, पुरुषों के बराबर अधिकार नहीं थे. उन्नीसवीं सदी के अमेरिका में, महिलाओं को कॉलेज जाने की, स्वयं की संपत्ति या वोट देने की अनुमति नहीं थी. इसकी बजाए उनसे उम्मीद थी कि वे विवाह करें, बच्चे पैदा करें और अपने पति का घर संभालें. एलिजाबेथ को घोड़ों की सवारी करना और ग्रीक का अध्ययन करना पसंद था. उनके पिता ने कहा कि एलिजाबेथ को एक लड़का होना चाहिए था!

लेकिन अपनी कमतर स्थिति को स्वीकार करने के बजाए, एलिजाबेथ ने कॉलेज जाकर अन्य समान विचारधारा वाली महिलाओं को वोट के अधिकार के लिए इकट्ठा और संगठित किया. यह एक असाधारण महिला की प्रेरणादायक कहानी है जिसने अपने संघर्ष से अमेरिका को हमेशा के लिए बदल दिया.

एलिजाबेथ कैडी स्टैंटन

और महिलाओं का वोट

अगर कोई आपसे कहे कि आप फलां नहीं बन सकते क्योंकि आप एक लड़की हैं, तो आप क्या करेंगे?

अगर कोई आपसे कहे कि आपका वोट किसी काम का नहीं है, और आपकी आवाज़ से कोई फर्क नहीं पड़ता है, क्योंकि आप एक लड़की हैं?

आप पूछेंगे क्यों?

क्या आप उससे बहस करेंगे?

क्या आप अपने अधिकारों के लिए लड़ेंगे?

पर एलिजाबेथ ने वो किया.

जब एलिजाबेथ कैडी एक छोटी लड़की थी तब ये सारी बातें एक दुखद सच्चाई थीं.

और शायद ये सभी बातें आज भी सच होतीं अगर एलिजाबेथ ने संघर्ष करके उन्हें बदला नहीं होता.

वो केवल चार साल की थी जब उसने पहली बार एक महिला को यह कहते हुए सुना कि लड़कों का जीवन लड़कियों की अपेक्षा कहीं बेहतर था.

वो महिला एलिजाबेथ की नई जन्मी छोटी बहन को मिलने आई थी. "बड़े अफ़सोस की बात है कि वो एक लड़की पैदा हुई!"

किसी भी छोटे बच्चे को देखकर भला कोई कैसे दुखी हो सकता है?

लड़की पैदा होना क्या कोई पाप है?

जब वो तेरह साल की थी, तब उसके पिता, जज कैडी के पास एक ग्रामीण महिला आईं. उसके पति की मृत्यु हो गई थी, और महिला ने अपना सारा जीवन फार्म पर बिताया था. पिता ने कहा कि अब वो फार्म उस महिला से छीन लिया जाएगा.

पति की मृत्य के बाद कानून के अनुसार अब महिला उस फार्म की मालिक नहीं रहेगी.

एलिजाबेथ इस अन्याय से बहुत भयभीत हुई.

एलिजाबेथ ने कहा कि ऐसे कानून को तुरंत रद्द करना चाहिए!

पर जज कैडी ने बताया कि एलिजाबेथ के कहने से कुछ भी नहीं बदलेगा.

वो कानून अभी भी बरक़रार रहेगा.

क्योंकि केवल पुरुषों को ही कानून बदलने की अनुमति थी.

एलिजाबेथ ने तभी यह फैसला लिया कि वो लड़कों वाले सारे काम खुद करेगी.

उसने उच्च दर्ज़े की घुड़सवारी सीखी और फिर ऊंची बाधाओं (हर्डल्स) पर कूदी.

उसने अपनी नाव में उफनती नदी को पार किया.

उसने ग्रीक भाषा की पढ़ाई की और उसमें सर्वश्रेष्ठ होने के लिए पुरस्कार जीता.

उसके पिता को गर्व हुआ.

लेकिन पिता विचारों की पक्की, उत्साही और नियम-तोड़ने वाली अपनी बेटी के बारे में चिंतित भी थे.

"अरे, तुम्हें लड़का होना चाहिए था!" पिता को पता था कि लड़का होने से एलिज़ाबेथ की ज़िंदगी काफी आसान होती.

लेकिन एलिजाबेथ की आसान चीज़ों में दिलचस्पी नहीं थी.
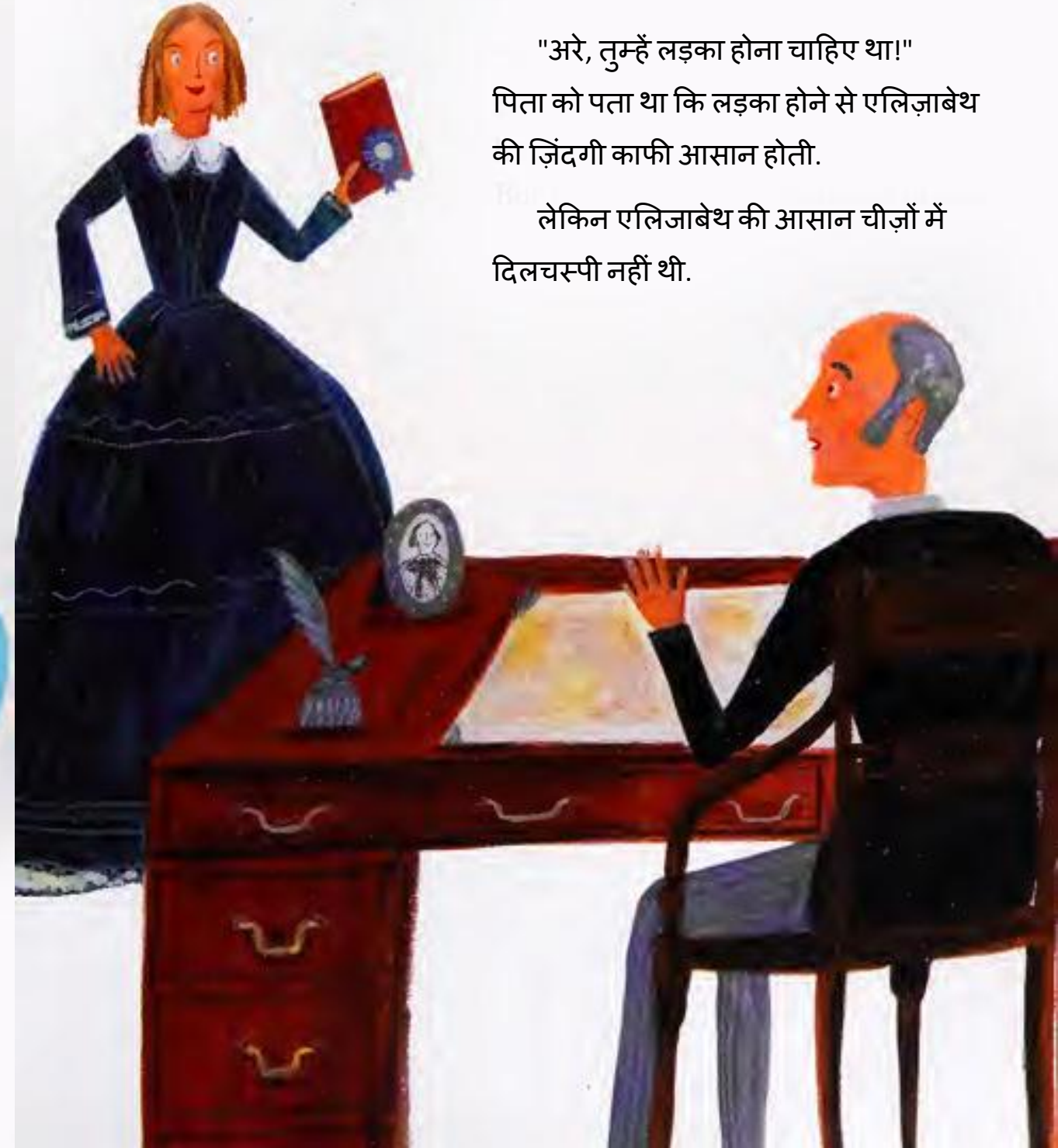
क्योंकि कॉलेज में सोलह साल की उम्र वाली लड़कियों को दाखिला नहीं मिलता था इसलिए एलिजाबेथ ने पिता से उसे लड़कियों के स्कूल में ही अपनी पढ़ाई जारी रखने को कहा.

इसलिए, जब अधिकांश युवा लड़कियों की शादी हो रही थी, या वो बर्तन धो रही थीं,

या फिर कपड़े धो रही थीं ,

या बच्चों की देखभाल कर रही थीं,

तब एलिजाबेथ धर्म, गणित, विज्ञान और फ्रेंच का अध्ययन कर रही थी.

बहुत सालों बाद एलिज़ाबेथ की मुलाक़ात हेनरी स्टैंटन से हुई.

वो एक "अबोलिशनिस्ट" थे - यानि वे गुलामों के उन्मूलन की लड़ाई में बहुत सक्रिय थे.

उन्होंने इस बात का अच्छा अंदाज़ था कि अगर लोगों के अधिकार नहीं हों तो वो कैसा महसूस करते होंगे.

जब एलिज़ाबेथ ने आज़ादी की बात की तो हेनरी हंसे नहीं.

जब एलिज़ाबेथ ने कहा कि सभी लोगों को अपनी मर्ज़ी के हिसाब से जीने की स्वतंत्रता होनी चाहिए, फिर भी वो हंसे नहीं.

एलिज़ाबेथ, हेनरी के नाम को अपने नाम के साथ जोड़ने के लिए इस शर्त पर राज़ी हुईं कि वो अपना भी पूरा नाम लिखेंगी. तब भी हेनरी उन पर नहीं हंसे.

फिर एलिजाबेथ कैडी, शादी के बाद एलिजाबेथ कैडी स्टैंटन बनीं. उनके सात बच्चे हुए. वो उन्हें बहुत प्यार करती थीं और उनके लिए खाना बनाती थीं और कपड़े धोती थीं.

एलिज़ाबेथ अपने बच्चों से प्यार करती थी, लेकिन उन्हें खाना बनाने, कपड़े सिलने और धोने का बिल्कुल शौक नहीं था.

एक दिन उनकी सहेली ल्यूक्रेटिया मॉट ने उन्हें दोपहर के भोजन पर आमंत्रित किया.

ल्यूक्रेटिया को हमेशा से एलिजाबेथ के प्रगितिशील विचारों पर गर्व था. उनका भी मानना था कि महिलायें सभी काम कर सकती थीं और यह उनका अधिकार था. भोजन में आई अन्य महिलाओं का भी इस प्रकार के प्रगितिशील विचारों में विश्वास था.

एलिजाबेथ को उससे बहुत ऊर्जा मिली. उन्होंने प्रस्ताव रखा कि वे महिलाओं की एक मीटिंग आयोजित करें.

वो एक ऐसी मीटिंग बुलाएं जिसमें बहुत सारी महिलायें चर्चा और बातचीत करने के लिए आएं.

लेकिन वे किस विषय पर बात करेंगी?

ऐसी बहुत सारी चीजें थीं जिन्हें ठीक करने की आवश्यकता थी.

शादीशुदा महिलाएं संपत्ति की मालिक नहीं हो सकती थीं. वे खुद के कमाए पैसों तक की भी मालिक नहीं हो सकती थीं.

एलिजाबेथ ने बहुत पहले ही जान लिया था कि केवल पुरुष ही कानूनों को बदल सकते थे.

क्योंकि केवल पुरुष ही वोट दे सकते थे.

यही असली समस्या थी!

महिलाओं का वोट, सब कुछ बदल सकता था.

यदि महिलाएं मतदान कर सकतीं, तो वे सभी प्रकार के कानूनों को बदलने में मदद कर सकती थीं!

यह विचार इतना चौंकाने वाला था, इतना विस्तृत और इतना साहसी था कि एलिजाबेथ के दोस्त ठहाका मार कर हंसे!

महिलाओं को इतना उत्तेजित देखकर दूसरे लोग क्या सोचेंगे?
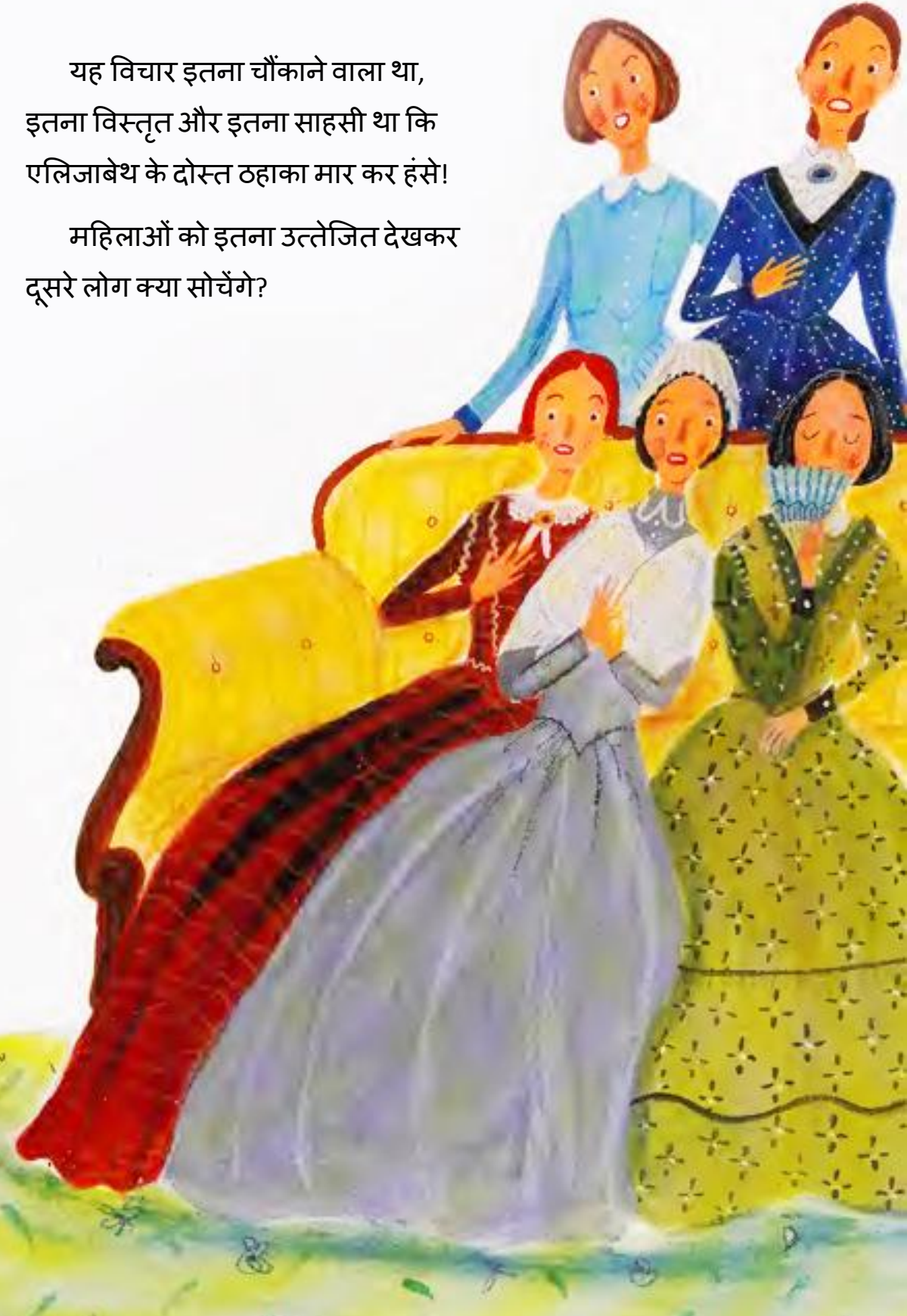
एलिजाबेथ डगमगाई नहीं.

वो जानती थी कि महिलाओं के वोट का अधिकार भारी अंतर ला सकता था.

वोट के अधिकार के लिए उन्हें संघर्ष करना ही होगा: "हमें यह करना ही होगा. वोट की लड़ाई हमें लड़नी ही होगी."

यहां तक कि उनके पति हेनरी को भी लगा कि वो बहुत आगे जा चुकी थी.

लेकिन 19 जुलाई, 1848 को जब एलिजाबेथ सभा स्थल पर पहुंचीं, तो उन्होंने देखा कि वो सही रास्ते पर अग्रसर थीं.

न्यूयॉर्क का सेनेका फॉल्स स्थित छोटा चर्च, सैकड़ों लोगों से भरा था.

एलिजाबेथ और अन्य महिलाओं ने मिलकर जो मसौदा लिखा था वो उन्होंने सबके सामने पढ़ा.

उन्होंने स्वतंत्रता की घोषणा से इस विचार को चुनौती दी कि "सभी पुरुष एक-समान होते हैं."

अपना भाषण समाप्त करने के बाद एलिजाबेथ ने भीड़ में महिलाओं के चेहरों को देखा और इंतजार किया.
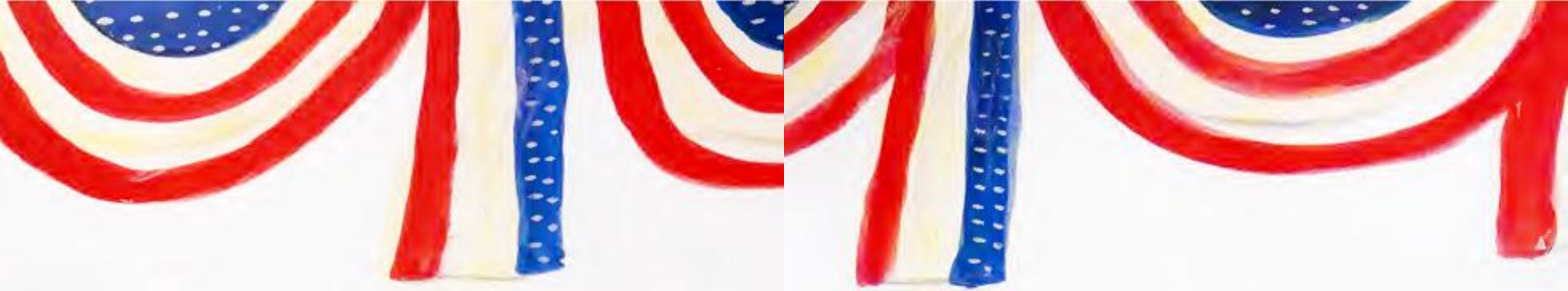
कमरे में सन्नाटा छाया था!

उसके बाद हंगामा शुरू हुआ.

महिलाओं ने शुरू में धीमे से, फिर ज़ोर-ज़ोर से चर्चा की

लोगों ने अपने विचार रखे और तर्क दिया :

महिलाओं को वोट की अनुमति मिलनी ही चाहिए.
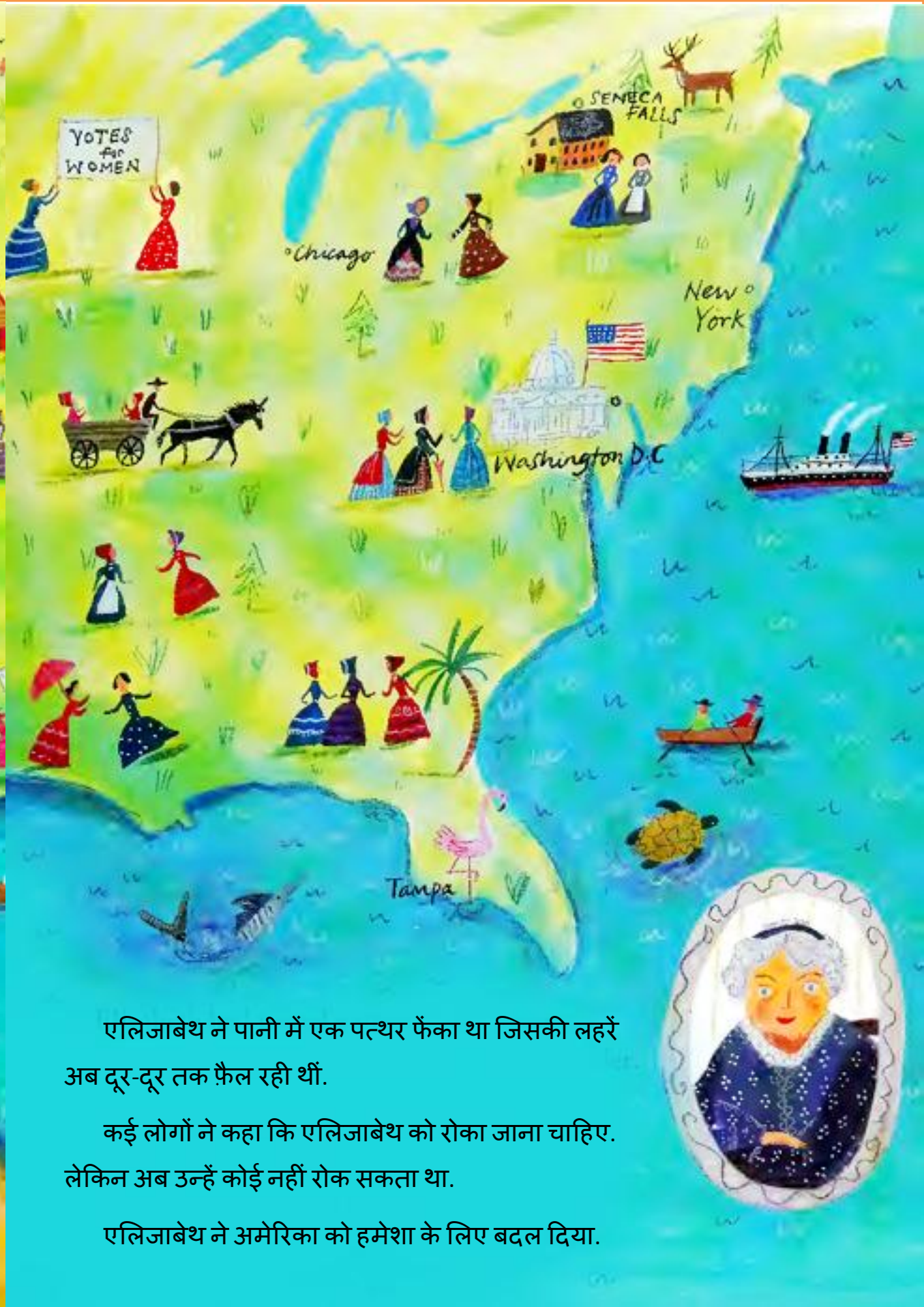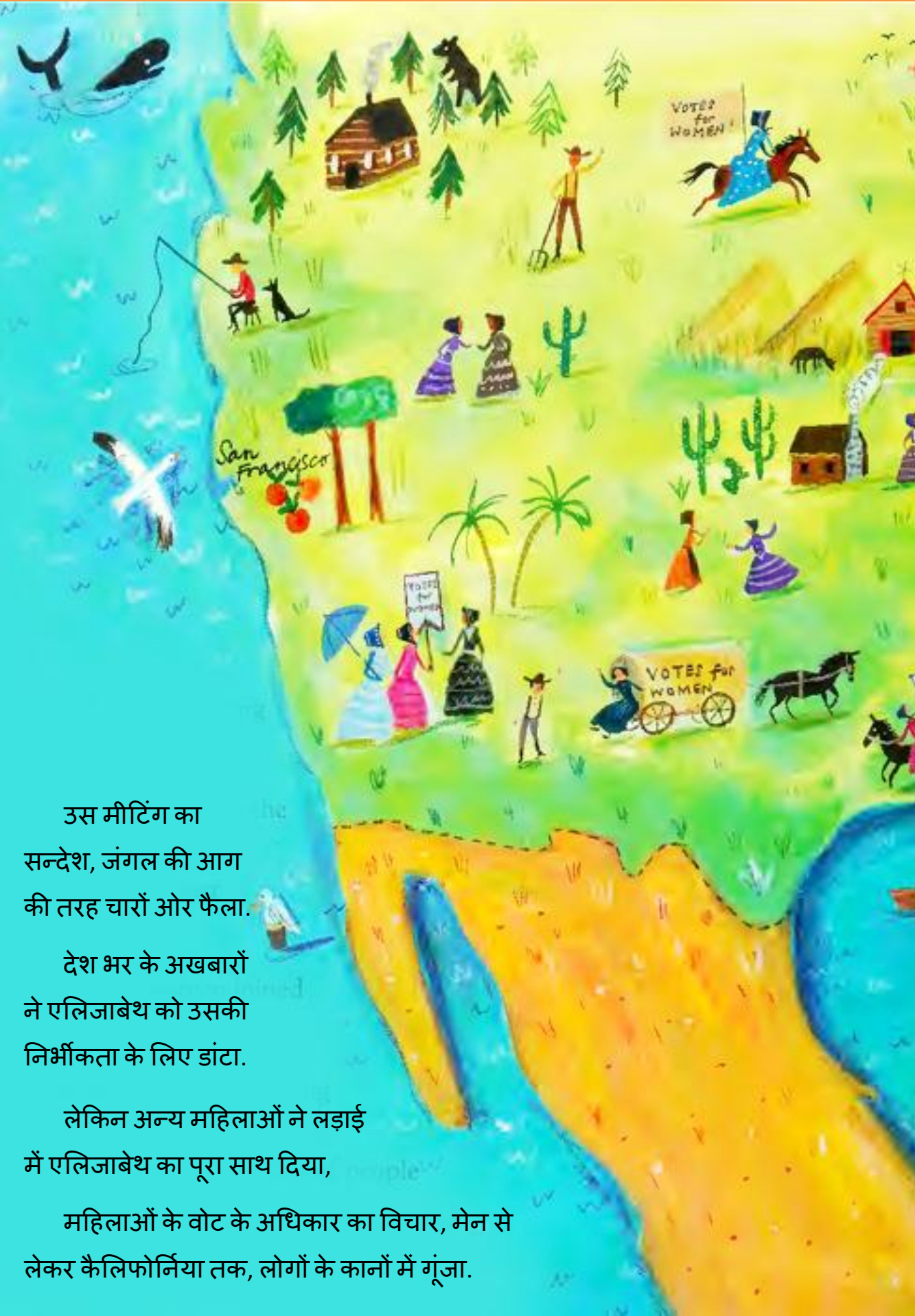
उस मीटिंग का सन्देश, जंगल की आग की तरह चारों ओर फैला.

देश भर के अखबारों ने एलिजाबेथ को उसकी निर्भीकता के लिए डांटा.

लेकिन अन्य महिलाओं ने लड़ाई में एलिजाबेथ का पूरा साथ दिया,

महिलाओं के वोट के अधिकार का विचार, मेन से लेकर कैलिफोर्निया तक, लोगों के कानों में गूंजा.

एलिजाबेथ ने पानी में एक पत्थर फेंका था जिसकी लहरें अब दूर-दूर तक फ़ैल रही थीं.

कई लोगों ने कहा कि एलिजाबेथ को रोका जाना चाहिए. लेकिन अब उन्हें कोई नहीं रोक सकता था.

एलिजाबेथ ने अमेरिका को हमेशा के लिए बदल दिया.

एलिजाबेथ कैडी स्टैंटन (1815-1902) और उनके पति हेनरी स्टैंटन छियालीस साल तक शादीशुदा रहे और उन्होंने मिलकर सात बच्चों की परवरिश की. इस दौरान, उन्होंने महिलाओं के अधिकारों के लिए अथक संघर्ष किया. उन्होंने 1866 में कांग्रेस में भी भाग लेने की कोशिश की. उनका तर्क था कि यद्यपि वो पुरुषों के लिए वोट नहीं दे सकती थीं, लेकिन मर्द उन्हें फिर भी वोट दे सकते थे! 1869 में, उन्होंने और सुसान बी. एंथोनी ने मिलकर नेशनल वुमन सफ़रेज एसोसिएशन बनाया. एलिजाबेथ ने इक्कीस वर्ष तक उसके अध्यक्ष के रूप में कार्य किया.

उन्होंने कभी भी खुद को सिर्फ महिलाओं के मतदान के अधिकार के संघर्ष के लिए सीमित नहीं किया. वह लड़कियों के खेल, संपत्ति और महिलाओं के बाल-अधिकार, सह-शिक्षा, महिलाओं के लिए समान मजदूरी, तलाक के कानूनों में सुधार, गुलामी उन्मूलन और जन्म नियंत्रण जैसे सुधारों के लिए भी सक्रिय रहीं. एलिजाबेथ की बेटी हैरियट स्टैंटन ब्लेच अपनी मां के नक्शेकदम पर ही आगे चली. 1907 में, हैरियट ने स्व-सहायक महिलाओं की "इक्विटी लीग" स्थापित की.

एलिजाबेथ के 80वें जन्मदिन पर, छह हजार से अधिक लोग, न्यूयॉर्क सिटी के मेट्रोपॉलिटन ओपेरा हाउस में जश्न मनाने के लिए एकत्रित हुए. उन्हें "ग्रैंड ओल्ड वुमन ऑफ अमेरिका" के रूप में सम्मानित किया गया और उसी वर्ष "स्टैंटन-दिवस" घोषित किया गया. 2006 में, न्यूयॉर्क राज्य ने इसे एक स्थायी आधिकारिक छुट्टी बनाया.

26 अक्टूबर 1902 को एलिजाबेथ कैडी स्टैंटन की मृत्यु हुई. उनकी मृत्यु के अट्ठारह साल बाद ही अमेरिका में महिलाओं को वोट देने का अधिकार मिला. उन्नीसवां संशोधन, अगस्त 1920 में ही प्रभावी हुआ. यह सब एलिजाबेथ के प्रयासों के कारण ही संभव हुआ. इस विजय और उनके प्रयासों के लिए हम हमेशा उनके आभारी रहेंगे.

समाप्त